तद्भव

तद्भव

आधुनिक रचनाशीलता पर केंद्रित विशिष्ट संचयन

वर्ष-11, अंक-2
पूर्णांक-47
जुलाई-2023

संपादक
अखिलेश

लेजरटाइप सेटिंग
मोहिनी शर्मा
दिल्ली

मुद्रण
ग्रैंड प्रिंटिंग प्रेस
गोमती नगर, लखनऊ

मूल्य
एक प्रति : दो सौ रुपये
संस्थाओं के लिए : तीन सौ पचास रुपये
वार्षिक सदस्यता : चार सौ रुपये (डाक खर्च सहित)
संस्थाओं के लिए : सात सौ रुपये (डाक खर्च सहित)
विदेश के लिए : सत्तर डालर
आजीवन सदस्यता : दस हजार रुपये

संपर्क
18/201, इंदिरा नगर,
लखनऊ - 226016
उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0522-2345301
ई-मेल : akhilesh_tadbhav@yahoo.com

समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक अखिलेश कुमार द्वारा 18/201, इंदिरा नगर, लखनऊ, उ.प्र. से प्रकाशित और ग्रैंड प्रिंटिंग प्रेस, 337 विजयीपुर, विशेष खंड, गोमती नगर, लखनऊ से मुद्रित

अनुक्रम

जीवन
अस निबहूर देसू-III **डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी** 1

शताब्दी
हरिशंकर परसाई की समकालीनता **संजीव कुमार** 15

लेख
पंजाब में भू स्वामित्व, जातीय वर्चस्व और दलित परिप्रेक्ष्य **विनोद तिवारी** 24 / औपनिवेशिक भारतीय सेना, भोजन और जाति : रसोइयों के विशेष संदर्भ में **सलमा वासी** 45

कहानियां
नटवार **देवेंद्र** 56 / बहुरूपिए **मो. आरिफ** 70 / लतीफा **कुणाल सिंह** 86 / ध्वनि लोक का वासी **प्रवीण कुमार** 94

मुलाकात
ये बात है तो चलो बात करके देखते हैं : प्रसिद्ध साहित्यकार **अनामिका** से **गरिमा श्रीवास्तव** की बातचीत 107

कविताएं
छंद छछंद **देवी प्रसाद मिश्र** 126 / कविताएं **बद्री नारायण** 131 / कविताएं **मनोज कुमार झा** 139 / पांच कविताएं **बसंत त्रिपाठी** 143 / हिटलर **शचींद्र आर्य** 149 / कविताएं **पार्वती तिर्की** 154

विशेष
कबीर : पहचान के बदलते आख्यान **तृप्ति श्रीवास्तव** 163 / कबीर का हिंदूकरण **डॉ. वीरू राजभर** 177

लंबी कहानी
प्रतिरूप **मनोज कुमार पांडेय** 197

स्मरणालोचन
हिंदी साहित्य में प्रयोगवाद-II **हरीश त्रिवेदी** 227

रिपोर्ताज
हम जंगल में ही रहेंगे और वहीं मरेंगे **ज्ञान चंद बागड़ी** 244

शोध
हरदेवी : उन्नीसवीं सदी की एक विस्मृत नायिका **रमण सिन्हा** 257

समीक्षाएं
जातीय इतिहास और स्मृति की गद्यगर्दी **आशुतोष** 281 / भारतीय इस्लाम : पहचान की निर्मिति और सियासत **इंद्रजीत कुमार झा** 287 / जाति और लिंग : जाति के इतिहास की लैंगिक दृष्टिकोण से अभिव्यक्ति **सतनाम सिंह** 294 / व्यापक स्तर पर जीवन की खोज **अरविंद त्रिपाठी** 298 / अन्य कथाओं की अंतर्कथा **आशीष मिश्र** 303 / होलोकॉस्ट के स्त्रियों पर पड़े प्रभावों का बारीक अध्ययन **प्रीति चौधरी** 309

संपादकीय

एक *दोस्त ने कहा, आजकल लोग बहुत बातें करते हैं जबकि दूसरे ने कहा, आजकल लोग बहुत कम बात करते हैं। पहले ने अपने कथन के समर्थन में तर्क दिया कि सड़क पर चलो या गली में, मेट्रो में या बस में या कहीं भी, अपने कानों में इअरफोन लगाए हुए भीड़, यह एक सहज सुलभ दृश्य है। उसने आंकड़े भी प्रस्तुत किए : 2222 की एक रिपोर्ट के मुताबिक प्रत्येक भारतीय दिन भर में 4.9 घंटे स्मार्टफोन का इस्तेमाल करता है। उन्होंने बड़े गर्व से कहा कि वह दिन दूर नहीं जब हमारा राष्ट्र इस मामले में भी टॉप पर पहुंच जाएगा और अपना विश्वगुरु होना सार्थक करेगा। अगले ही क्षण उनका सवाल था : क्या आजादी के साठ साल बाद तक, नेहरू, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी की सरकारों में लोग स्मार्टफोन पर इतनी बातें कर पाते थे? जवाब भी उनका था : बिलकुल नहीं। क्योंकि बतियाने की संस्कृति किसी समाज के प्रसन्न, आश्वस्त और गतिशील होने का द्योतक है। ये सब पहले नहीं था लेकिन विगत दस वर्षों से है; इसे विदेशी भी स्वीकार कर रहे हैं। इसके बाद वह चुप हो गए, इसलिए नहीं कि उक्त मुद्दे पर आगे मैं अपने विचार रखूं बल्कि शायद उनकी अपेक्षा यह थी कि मैं उनका जोरदार समर्थन करूं। जबकि मैं कहना चाहता था : आप काफी वाहियात विश्लेषण कर रहे हैं। नेहरूजी, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी के कार्यकाल में कैसे लोग स्मार्टफोन पर इतनी बातें करते जब स्मार्टफोन, टच स्क्रीन वाला मोबाइल पहली बार 1994 में खरीद के लिए उपलब्ध हुआ। मैंने चाहने के बावजूद उनसे यह भी नहीं कहा कि उनके आंकड़े अधूरे और दिशाभ्रष्ट हैं क्योंकि 4.9 घंटे स्मार्टफोन इस्तेमाल करने का मतलब यह नहीं कि उतनी देर कोई बातचीत करता है। बल्कि नए आंकड़ों के अनुसार प्रत्येक भारतीय प्रति माह 761 मिनट के औसत से फोन पर वार्ता करता है। यानी कि प्रतिदिन करीब 25-26 मिनट। 4.9 घंटे में इतना कम कर दें तो जो 4.5 घंटे के लगभग समय बचता है उसमें वह सोशल मीडिया पर सक्रिय रहता है, गेम खेलता है, चैट करता है आदि अदि। फिर कानों में इअरफोन लगाने का मतलब यह नहीं कि वह किसी से बात करने में ही मुब्तिला है। हो सकता है, वह मनपसंद संगीत सुन रहा हो अथवा सुन रही हो। कोई गीत, गिटार, बांसुरी कुछ भी सुना जा सकता है— भाषण, पाठ्यक्रम का लेसन, नॉनवेज चुटकुला, एफएम कुछ भी सुन रहे हो सकते हैं। किसी को यकीन नहीं होगा मगर सत्य यह है कि मैंने इनमें से कुछ भी उनसे नहीं कहा। क्योंकि वह मुझसे अपने समर्थन की उम्मीद कर रहे थे जोकि मैं कर नहीं सकता था क्योंकि जैसा अभी बताया कि मैं उनकी अवधारणाओं से कतई असहमत था। तो समर्थन कर नहीं सकता था और मुखालिफ बोल*